अल्लाह तआ़ाला के अस्तित्व मे संदेह का शैक्षिक एवं गंभीर विश्लेषण

लेखः

शैख माजिद बिन सोलेमान अर्रस्सी

الترجمة الهندية لمقالة: هل الله موجود؟ مقال علمي هادئ لنقاش ظاهرة الشك في وجود الله لفضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

पुस्तक का विवरण

पुस्तक का नामः अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व मे संदेह का शैक्षिक एवं गंभीर विश्लेषण

लेखकः शैख माजिद बिन सोलेमान अर्रसी

प्रकाशन वर्षः 1442 हिजरी – 2021 इसवी

ईमेलः binhifzurrahman@gmail.com

الكتاب منشور في موقع صيد الفوائد و إسلام هاوس

https://islamhouse.com/hi/main/

http://www.saaid.net/book/list.php?cat=92

ربِّ يسِّر وأعِن

अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के चार प्रमाण हैं:स्वाभाव,बुद्धि,धर्म एवं चेतना

- अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के **स्वाभावी प्रमाण** यह है कि मख़्लूक़(जीव)बिना किसी पूर्व सोच व विचार और शिक्षण एवं अध्यापन के अपने रचनाकार पर ईमान के साथ पैदा होता है,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وإذ أخذ ربك من بني آدم من ظهورهم ذريتهم وأشهدهم على أنفسهم ألست بربكم قالوا بلى شهدنا﴾[1].

अर्थातःजब आप के रब ने मनु के संतान की पीठ से उनके संतान को निकाला और उनसे ही उनके प्रति इकरार लिया कि किया में तुम्हारा रब नहीं हूं?सबने उत्तर दिया क्यों नहीं?हम सब गवाह बनते हैं।

इस स्वभाव के तकाज़े से वही व्यक्ति मूंह फेर सकता है जिस पर कोई बाहरी प्रभावी प्रभाव डाले,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"प्रत्येक शिशु स्वभाव(इस्लाम)पर पैदा होता है।उसके माता पिता उसे यहूदी,इसाई अथवा मजूसी बना लेते हैं" ।[2]

यह हम देखते भी हैं कि मनुष्य को जब हानी पहुंचता है तो वह अपने स्वभाव के कारण(या अल्लाह)पुकार उठता है,किसी नासितक के बार में आया है कि जब उसे कोई विपत्ति आई तो बिना सोचे समझे उसके मूंह से(या अल्लाह)निकल गया,क्योंकि मनुष्य का स्वभाव अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर साक्ष्य है।

यह आयत इस बात पर साक्ष्य है कि मनुष्य के स्वभाव में अल्लाह के अस्तित्व का इकरार करना डाल दिया गया है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काल में मुशरिकों(बहुदेववादियों)ने भी अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का इकरार किया,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उनके प्रति फरमायाः

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ﴾[3]

---

[1]. سورة الأعراف: 172 .

[2]इसे बोखारी:1359 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[3]. سورة الزخرف: 87 .

अर्थातःयदि आप उनसे पूछें कि उन्हें किसने पैदा किया है?तो निसंदेह यह उत्तर देंगें कि अल्लाह ने,फिर ये कहां उलटे जाते हैं?

- अल्लाह के अस्तित्व का बौद्धिक तर्क यह है कि इन समस्त प्राचीन एवं नव जंतु के लिए किसी रचनाकार का होना अवश्य है जिसने उन्हें अस्तित्व में लाया,क्योंकि ये प्राणी अपने आप को स्वयं ही अस्तित्व में नहीं ला सकते,इस लिए कि अ़दम(जिसका अस्तित्व न हो)स्वयं की रचना नहीं कर सकता,क्योंकि वह अस्तित्व से पूर्व लुप्त था,तो भला वह अन्य जीवों का रचनाकार कैसे हो सकता है?!

इसी प्रकार उन जीवों का बिना किसी निर्माता के अकस्मात अस्तित्व में आना दो(2)कारणों से असंभव हैः

प्रथम कारणःप्रत्येक जंतु के लिए रचनाकार एवं निर्माता का होना अवश्य है,इस पर बुद्धि भी साक्ष्य है और शरीअ़त(धर्म)भी,अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿أم خُلِقوا من غير شيء أم هم الخالقون﴾[4].

अर्थातःक्या यह बिना किसी(रचनाकार)के स्वयं ही पैदा होगए हैं?अथवा यह स्वयं पैदा करने वाले हैं।

द्वितीय कारणः इन जीव एवं जंतुओं का इस अभूतपूर्व प्रणाली,संगठित व्यवस्था,कारण व कारण-वाचक एवं जीवों के मध्य सह-संबंध के साथ अस्तित्व में आना,जिसमें न कोई अनुशासनहीनता और आपसी भिड़ंत,यह इस बात को असंभव प्रमाणित करती है कि वह बिना किसी रचनाकार के अकस्मात अस्तित्व में आगए हैं,क्योंकि अकस्मात अस्तित्व में आने वाला वस्तु अपने अस्तित्व की मौलिकता में भी इस प्रकार व्यवस्थित नहीं होता,तो भला वह अपने उत्तरजीविता एवं विकास के चरण में क्यों संगठित हो सकता है?

अल्लाह तआ़ला के इस कथन को देखेंः

﴿لا الشمس ينبغي لها أن تدرك القمر ولا الليل سابق النهار وكل في فلك يسبحون﴾[5].

अर्थातःन सूर्य के लिए यह उचित है कि चांद को पकड़े और न रात दिन पर आगे बढ़ जाने वाली है और सबके सब आकाश में तैरते फिरते हैं।[6]

---

[4]. سورة الطور: 35

[5]. سورة يٰس: 40

अबूहनीफा रहिमहुल्लाहु. जो बौद्धिक्ता एवं बुद्धिमत्ता में प्रसिद्ध थे।उनके प्रति आया है कि उनके पास दहरिया[7]नास्तिकों का एक समुंह आया जो सोमुन्निया[8]के नाम से जाना जाता था और अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का इंकारी था,अबूहनीफा रहि़महुल्लाह दहरिया के विरूद्ध योद्धा के जैसा थे,ये दहरिया उनकी हत्या के लिए अव्सर के खोज में लगे रहते थे,एक दिन वह मस्जिद में बैठे थे कि एक जथ्था नंगे तलवार के साथ उन पर टूट पड़ा और उनकी हत्या करना चाहा,उनसे अबूहनीफा ने कहाःमेरे एक प्रश्न का उत्तर देदो फिर जो चाहो करो।

उन्होंने कहाःप्रश्न किया है।

आपने फरमायाःतुम उस व्यक्ति के बारे में किया कहते हो जो यह कहे कि मेंने एक ऐसा नांव देखा जो सामान से लदा और बोझ से भरा था,समुद्र के बीच मझदार में भाड़ी मौजों एवं बाग़ी हवाओं ने उसे घेर लिया,वह उन मौजों और हवाओं से लड़ता हुआ सीधे अपने मार्ग पर चलता रहा,न उसमें कोई नाविक था जो उसका नौकानयन करे,न उसका कोई संरक्षक था जो उसका संरक्षण करे,कया मानवीय बुद्धि उसे स्वीकार करेगा?

उन्हेंने कहाःनहीं,बुद्धि उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

अबूहनीफा ने फरमायाःसुब्हा़नल्लाह!जब मानवीय बुद्धि यह स्वीकर नहीं कर सकता कि कोई नांव समुद्र के अंदर बिना किसी संरक्षक और नाविक के चल सकता है,तो भला यह संसार अपने विभिन्न परिस्थिति,विभिन्न कार्यों,विस्तृत परिसर एवं विशाल पिनहाइयों के साथ बिना किसी रचनाकार एवं संरक्षक के क्यों स्थिर रह सकता है?!

यह सुन कर सारे के सारे दहरिये रोने लगे और एक बोल में बोल पड़ेःआपने सत्य फरमाया,फिर उन्होंने अपने तलवार नयाम में डाल लिए और तौबा कर लिया।

अबूहनीफा का **उद्देश्य** यह था कि नांव का एक स्थान से दूसरे स्थान तक बिना किसी नाविक एवं संरक्षक के पहुंचना असंभव है,इसको प्रमाण बना कर अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को

---

[6]इस विष्य में शैख अ़ब्दुलअ़ज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह अलज़हरानी की पुस्तकः"इब्दाउ़लखालिक फी नज़्मे खलके़हि दलीलुन अ़ला वह़दानेयतेहि"का अध्ययन करें,प्रकाशकःदार्रुतौही़द.रियाज।

[7]अलदहरी.दाल के जबर और तशदीद के साथ.का अर्थःवह नासतिक है जो क्यामत पर ईमान नहीं रखता,अलदोहरी.दाल के पेश और तशदीद के साथ.का अर्थःवह व्यक्ति है जो वृद्ध हो।देखेंःलसानुल अ़रब,असलःदहर

[8]सोमुन्नियाःभारत का एक नासतिक एवं दहरिया समुदाय है,जौहरी कहते हैःयह बुत पूजने वालों का एक संप्रदाय है,जो पुनर्जीवन को मानता है और खब्रों के माध्यम से ज्ञान प्राप्ती का इंकार करता है।देखेंःलेसानुलअ़रब,असलःसमन

सिद्ध किया जाए कि यह विशाल संसार बिना किसी निर्माता एवं विख्यात मन के कैसे चल सकता है जिसमें (लाखों)ग्रहें बिना किसी अनुशासनहीनता के अपने स्थान पर चल रहे हैं,फिर भी कोई आकर यह कहदे कि यह संसार बिना किसी विख्यात मन के ऐसे ही चल रहा है(तो इसे क्यों स्वीकारा जा सकता है)?।

यह अनुचित बात है।बल्कि एक निर्माता का अस्तित्व अतयंत आवश्यक है।

शाफेई रज़ीअल्लाहु अंहु से पूछा गया कि:रचनाकार के अस्तित्व का क्या प्रमाण है?

आपने फरमाया:तूत का पत्ता,रंग,गंध एवं स्वभाव सब तुम लोगों के निकट समान हैं?

उन्होंने कहा:हां।

आपने फरमाया:उसे रेशम का कीड़ा खाता है तो उससे अति सुंदर रेशम निकलता है,मधु मक्खी खाती है तो उससे मध निकलता है,बकरी खाती है तो उससे लीद निकलता है और हिरन खाता है तो उससे मुश्क निकलता है,कोन है जो यह विभिन्न चीजें पैदा करता है जबकि सब(का खाना)एक ही स्वभाव का है?!

तो लोगों को यह प्रमाण उचित लग गया,अतःउन्होंने आपके हाथ पर इस्लाम स्वीकार कर लिया,उनकी संख्या सतरह(17)थी।शाफेई का **उद्देश्य** लोगों को यह था कि रचना के इस क्रमशः एवं विविधता को प्रमाण बना कर अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को प्रमाणित करें कि तूत के पत्ते को जब रेशम का कीड़ा खाता है तो उससे अति सुंदर रेशम निकलता है,फिर उसे तीन विभिन्न जीव खाते हैं तो प्रत्येक जीव से विभिन्न प्रकार की चीज निकलती है,तो क्या यह उचित बात है कि बिना किसी विख्यात मन के ऐसा वैसे ही अकस्मात हो जाए?!

यह अनुचित बात है,बल्कि रचनाकार का अस्तित्व अति आवश्यक है।

अह़मद बिन ह़ंबल ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि एक मज़बूत एवं चिकना सा किला है,जिसमे कोई सूराख नहीं,उसका बाहरी भाग पिघली हुई चांदी के जैसा और आंतरिक भाग शुद्ध सोने के जैसा है,फिर उसकी दीवारें फट जाती और उससे एक सुनने और एक देखने वाला जीव प्रकट होता है।

किला से आप का अर्थ:अंडा एवं जीव से आपका अर्थ:चूजा़ था।

अह़मद बिन ह़ंबल का **उद्देश्य** यह था कि अंडा से चूज़े के निकलने को प्रमान बना कर अल्लाह के अस्तित्व को प्रमाणित किया जाए,अंडा चूज़े के लिए किला के जैसा है,जिससे वह सुनने एवं देखने की शक्ति के साथ अस्तित्व में आता है,कया बुद्धि इसे स्वीकार करती है कि

अंडा का अस्तित्व और चूज़े का उससे निकलना बिना किसी संचालक के संचालन के अकस्मात घटित होजाता है?!

यह अनुचित बात है,बल्कि रचनाकार का अस्तित्व अतयंत आवश्यक है।

हारून रशीद ने इमाम **मालिक** से रचनाकार के अस्तित्व से संबंधित पूछा तो उन्होंने निर्माता के अस्तित्व का प्रमाण यह प्रस्तुत किया कि जीव जंतु की स्वरें विभिन्न हैं,उनके धुन एवं अंदाज़ विभिन्न हैं और उनकी भाषाएं विविध हैं।

इस अध्याय में चारों इमामों के कथन थे(जिन्हें आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया)।

एक देहाती से पूछा गयाःतूने अपने रब को कैसे जाना?तो उसने उत्तर दियाःलीद ऊंट पर साक्ष्य होती है,गोबर गधा का प्रमाण देता है एवं पैर के चिन्ह क़ाफ़िला का प्रमाण देता है,तो क्या सितारों एवं ग्रहों से भरा यह आकाश,गलियों एवं राजमाग्रों से आबाद यह पृथ्वी और ठाठें मारती हुई मोजों का यह समुद्र,सुनने एवं देखने वाले निर्माता एवं रचनाकार का प्रमाण नहीं देता?

इब्ने हानी[9]से सपने में पूछा गयाःअल्लाह तआ़ला ने आप के साथ कैसा व्यवहार किया?

उन्होंने कहाःमूझे अल्लाह ने उन पंक्तियों के कारण क्षमा प्रदान कर दिया जो मेंने नरगिस(पुष्प)के प्रति कहा था,वह पंक्तियां यह हैंः

تأمّل في نباتِ الأرض وانظر   إلى آثارِ ما صنع المليكُ

عيونٌ من لُجينٍ شاخصاتٌ   بأحداقٍ كما الذهبُ السبيكُ

على قُضُبِ الزَّبرجَدِ شاهداتٌ   بأن الله ليس له شريكُ

وأن محمدا عبدٌ رسولٌ   إلى الثقلين أرسله المليكُ[10]

अर्थातःपृथ्वी में उगने वाले पौदों पर विचार करो और राजा की रचना के चिन्हों में विचार करो।

चांदी(सी सफेद)आंखें अपनी(काले)पुत्लियों के साथ ऐसे टकटकी लगा कर देखती हैं जैसे वह चमकते डाल पर सोने की ढली हों,यह सब इस बात पर साक्ष्य हैं कि अल्लाह का कोई साझी

[9]उनकी कुन्यित अबू नवास है।

[10]कुछ व्याख्याताओं ने इन किस्सों को शाफेई,अह़मद,हारून रशीद एवं अबू नव्वास से इस आयतः........... कि व्याख्या में उल्लेख किया है।इसी प्रकार **फखरुद्दीन** राज़ी ने अपनी पुस्तक"मफातीहुलग़ैब"(108-109／2),प्रकाशकःदारूलफिक्र,प्रकाशन 1,सन 1410 हिजरी में रचनाकार के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में उल्लेख किया है

नहीं।और मोह़म्मद(अल्लाह के)बंदे एवं रसूल हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने मनुष्य एवं जिन्नातों की ओर भेजा।

अल्लाह तआ़ला के आश्चर्यजनक जीवों में मच्छर की भी गिंती होती है,अल्लाह तआ़ला ने उसके अंदर अनेक नीतियां रखी है,अतःअल्लाह ने उसके अंदर स्मृति शक्ति और विचार शक्ति रखी है,उसे छूने,देखने,सूंघने की शक्ति प्रदान की,उसके अंदर खाना प्रवेश होने का स्थान बनाया,उसके शरीर में पेट,रगें,बुद्धि और **हड्डियां** पैदा कीं,पाक है वह अल्लाह जिसने आकलन किया और मार्ग दिखाई और किसी भी वस्तु को बेकार नहीं छोड़ा।

अबुलअला़ **अलमअ़र्री** ने कितनी सुंदर कविता कही है:

يا من يرىمدَّ البعوضِجناحها   في ظلمةِ الليلِ البهيمِ الأليلِ

ويرى مناطَ عروقِها في نَحرِها   والمُخَّ من تلك العظامِ النُّحَّلِ

ويرى خرير الدم في أوداجِها   متنقِّلا من مفصلٍ في مفصلِ

ويرى وصول غِذى الجنين ببطنِها   في ظلمةِ الأحشا بغير تَمَقُّلِ

ويرى مكان الوطءِ من أقدامِها   في سيرها وحثيثها المستعجلِ

ويرى ويسمعُ حِسَّ ما هو دونَها   في قاع بحرٍ مظلمٍ متهوّلِ

امنُن علي بتوبة تمحو بها   ما كان مني في الزمانِ الأولِ[11]

अर्थातःए वह(रब कि)जो अतयंत अंधेरी रात में मच्छर के पंख के फैलाने को देखता है,उसके गले में जो शहे रग और उसकी पतली **हड्डियों** के अंदर के गूदे को भी देखता है।

उसकी रगों में दोड़ते रक्त को भी देखता है,जो एक अंग से दूसरे अंग की ओर जाता रहता है।

---

[11]इन पंक्तियों को शहाबुददीन अलअबशही ने अपनी पुस्तक:"अलमुसतरफ फी कुल्ले फन्निन मुसतरफ"पृष्ठ संख्या:374 में उल्लेख किया है,प्रकाशक:दारूलकुतुब अलइलमिया।

जनीन(मच्छर)के पेट में खाना कैसे पहुंचती है,आंतों के अंधेरे के मध्य उसे भी बिना किसी कठिनाई के देखता है।

वह अपने चाल और दौड़ भाग के मध्य जिस स्थान पर अपना पैर रखता है,उसे भी अल्लाह तआ़ला देखता है।

अंधेरे एवं भयावक समुद्र की गहराई के अंदर रहने वाली मच्छर से भी अधिक पतला जीव के भाव को अल्लाह तआ़ला देखता और सुनता है।

हे अल्लाह!मुझे ऐसी तौबा प्रदान कर जिसके माध्यम से तू मेरे समस्त पूर्व के पापों को क्षमा प्रदान करदे।

इस आधार पर आज के काल में जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का खंडन करे उससे यह प्रसन्न पूछा जाए किःआज जो विभिन्न प्रकार के वायुयान,प्रक्षेपास्त्र,विमानें और यंत्र अस्तित्व में आए हुऐ हैं,वे यूंही स्वयं से अकस्मात अस्तित्व में आगए हैं?

यदि कोई व्यक्ति आपसे कहे कि एक **अद्भुत** वहेली है,जिसके चारों ओर बगीचे लगे हुए हैं,उन बगीचों के मध्य नहरें चल रही हैं,वह महल आंखों को चोंध्यिाने वाली क़ालीनों एवं रौनक वाले शयनकक्षों से सजी है,उसे अनेक प्रकार के आराम वाली चीजों से सजाया गया है,जो उसकी सुंदरता एवं संपूर्णता को चार चांद लगाते हैं,फिर वह व्यक्ति कहे किःइस हवेली ने स्वयं ही समस्त सुंदरता एवं संपूर्णता को अस्तित्व में लाया,अथवा यूंही बिना किसी आविष्कारक के स्वयं ही अकस्मात अस्तित्व में आगया,क्या आप इसकी पुष्टि करेंगे?आपका उत्तर यही होगा किःनहीं हरगिज नहीं।

क्या इसके पश्चात भी आपकी बुद्धि यह मानती है कि इस विशाल संसार ने अपनी विस्तृत भूमी,महान आकाश,ग्रहें,अभूतपूर्व एवं आश्चर्यजनक प्रणाली के साथ स्वयं अपने आप को अस्तित्व में लाया,अथवा बिना किसी आविष्कारक एवं रचनाकार के यूंही स्वयं अकस्मात अस्तित्व में आगया?!

सारांशःजब यह संभव नहीं कि यह जीव स्वयं को पैदा करें, अथवा यूंही स्वयं अकस्मात अस्तित्व में आजाएं,तो यह मूलभूत सी बात हुई कि उनका कोई न कोई रचनाकार एवं अविष्कारक अवश्य है,और वह है अल्लाह रब्बुलआ़लमीन।

अल्लाह तआ़ला ने इस बौधिक एवं धार्मिक प्रमाण को सूरह अलतूर के अंदर उल्लेख किया हैः

﴿أم خلقوا من غير شيء أم هم الخالقون﴾[12]

अर्थातःक्या यह बिना किसी(पैदा करने वाले)के स्वयं पैदा होगए?अथवा यह स्वयं पैदा करने वाले हैं।

अर्थःन वह बिना रचनाकार के पैदा हुए और न उन्होंने स्वयं अपनी ज़ात को पैदा किया,जिससे यह अनिवार्य हो गया कि उनका रचनाकार अवश्य है और वह है अल्लाह तबारक वतआ़ला।

जोबैर बिन मुतइ्म ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूरह अलतूर की तिलावत(सस्वरपाठ)करते हुए सूना,जब आप निम्नलिखित आयत पर पहूंचेः

﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِشَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ * أَمْ خَلَقُوا السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ بَل لايُوقِنُونَ * أَمْ عِندَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُالْمُصَيْطِرُونَ﴾[13]

(अर्थातःक्या वह बिना किसी चीज के स्वयं ही पैदा होगए हैं अथवा यह स्वयं अपने रचनाकार हैं अथवा आकाशों एवं पृथ्वी को उन्होंने पैदा किया है?वास्तव यह है कि वे विश्वास ही नहीं रखते।क्या उनके पास आप के रब के खजाने हैं अथवा यह उन खजानों पर आदेश चलाने वालेहैं?)

वह उस समय मुशरिक(बहुदेववाद)थे,उनका बयान है किःइन आयतें सूनकर मेरा दिल उड़ने लगा,यह प्रथम अव्सर था जब मेरे दिल में ईमान ने स्थान बनाया।[14]

- रही बात अल्लाह के अस्तित्व के धार्मिक प्रमाण की तो समस्त आकाशीय पुस्तकें इस पर साक्ष्य हैं,और उनके अंदर जीव जंतुओं के कलयाण पर आधारित जो आदेश आए हैं,वे भी इस बात के प्रमाण हैं कि वह ऐसे रब की ओर से नाज़िल हुए हैं जो नीतियों वाला है एवं अपने जीवों के कलयाण से अति अवगत है,इसी प्रकार उन पुस्तकों के अंदर संसार की जो सूचनाएं आईं हैं और जिन की पुष्टि काल के घटनाओं से होती है,वा भी इस बात के साक्ष्य हैं कि वे ऐसे रब की ओर से नाज़िल हूई हैं जो उन चीज़ो को अस्तित्व में लाने पर समर्थ है जिनकी उसने सूचना दी है।

---

[12]. سورة الطور : 35

[13]. سورة الطور : 35 – 37

[14]इसे बोखारी ने अनेक स्थानों पर वर्णित किया है,देखेंःह़दीस संख्याः4853 एवंः4023

तथा कुरान के अंदर जो समरसता एवं समानता पाई जाती है,उसके अंदर अंतर्विरोध नहीं,उसका भाग दूसरे भाग की पुष्टि करता है,यह भी इस बात का ठोस प्रमाण है कि वह नीति वाले एवं अति ज्ञान वाले रब की ओर से नाजिल हुआ है,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿أفلا يتدبرون القرآن ولو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا﴾[15]

अर्थात:क्या यह लोग कुरान में चिंता नहीं करते?यदि यह अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो निसंदेह इसमें अनेक भेद पाते।

यह उस हस्ती के अस्तित्व का भी प्रमाण है जिसने कुरान के माध्यम से वार्तालाप किया और वह है अल्लाह तआ़ला।

रही बात अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के **आध्यात्मिक प्रमाण** की तो यह दो प्रकार के हैं:

प्रथम प्रकार:हम सुनते और देखते हैं कि पूकारने वालों की पूकार सूनी जाती और बेसहारों के लिए सहायता नाज़िल होती है,जो अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का ठोस प्रमाण है,क्योंकि दुआ स्वीकार होना इस बात का प्रमान है कि एक रब है जो पूकारने वाले की दुआ को सुनता और स्वीकार करता है,क्योंकि वह अल्लाह को ही पूकारता है,अल्लाह का फरमान है:

﴿وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِن قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ﴾[16]

अर्थात:नूह़ के उस समय को याद कीजिए जबकि उसने उससे पहले दुआ कि हमने उसकी दुआ स्वीकार की।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿إِذْتَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ﴾[17].

अर्थात:उस समय को याद करो जब कि तुम अपने रब से फरयाद कर रहे थे,फिर अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी सुन ली।

अनस बिन मालिक रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि एक व्यक्ति शुकर्वार के दिन मस्जिदे नबवी में उस द्वार से प्रवेश किया हुआ जो मिंबर के ठीक सामने था जबकि रसूल सल्लल्लाहु

---

[15]. سورة النساء: 82

[16]. سورة الأنبياء : 76

[17]. سورة الأنفال : 9

अलैहि वसल्लम खड़े प्रामर्श प्रस्तुत कर रहे थे,वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़ा हो कर पूछने लगाःअल्लाह के रसूल! पशु व जानवर हलाक हो गए और रास्ते टूट फूट गए हैं,आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह हम पर वर्षा बरसाए।रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठा कर यूं दुआ फरमाईः"हे अल्लाह!मह पर वर्षा बरसा।हे अल्लाह हम पर वर्षा बरसा।हे अल्लाह हम पर दया वाला वर्षा बरसा"।अनस रज़ीअल्लाहु अंहु कहते हैं किःअल्लाह की क़सम!हमें दूर दूर तक आकाश में कोई छोटा अथवा बड़ा बादल का टुकड़ा दिख नहीं रहा था और न हमारे और सिलअ़ पहाड़ी के मध्य कोई घर अथवा हवेली ही का बाधा था(कि हम बादलों को न देख सकते हों)।अचानक सिलअ़ पहाड़ी के पीछे से ढ़ाल के जैसा एक बादल उभरा।जब वह आकाश के मध्य में आया तो इधर उधर फैल गया,फिर वह बरसने लगा,अल्लाह की क़सम!हमने सप्ता भर सूर्य न देखा।दूसरे शुकर्वार को फिर उसी द्वार से एक मनुष्य मस्जिद में प्रवेश किय जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े प्रामर्श प्रस्तुत कर रहे थे,उसने आपके समकक्ष कहाःअल्लाह के रसूल!धन नष्ट होगए और रास्ते बंद होगए हैं,अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमसे इस वर्षा को रोक ले।अनस रजीअल्लाहु अंहु कहते हैं कि फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों हाथ उठा कर दुआ कीः"हे अल्लाह!यह वर्षा हमारे इर्द गिर्द तो हो किन्तु हम पर न बरसे।हे अल्लाह!इसे टीलों,पहाड़ो,मैदानों,वादियों एवं बागिचों पर बरसा"।वर्णनकर्ता कहते हैं कि वर्षा फोरन बंद होगया और हम धूप में चलने फिरने लगे।[18]

प्रार्थना का स्वीकार होना आज भी हमारे समाज में देखने में आता रहता है,शर्त यह है कि सच्चे दिल से अल्लाह तआ़ला की ओर रोजू करके लौ लगाया जाए और दुआ के स्वीकार होने के कारणों को अपनाया जाए।

द्वितीय प्रकारःपैगंबरों के वे चिन्ह जो मोजेज़े(चमत्कार)से जाने जाते हैं,जिन्हें लोग देखते अथवा उनके प्रति सुनते हैं,वह भी उन के भेजने वाले(रब)के अस्तित्व के ठोस प्रमाण हैं,जोकि अल्लाह तआ़ला है,क्योंकि यह चमत्कार मानवीय शक्ति से उपर होते हैं,जिन्हें अल्लाह तआ़ला अपने संदेशवाहकों की पुष्टि एवं समर्थण के रूप में अस्तित्व में लाता है।

उदाहरणःमूसा अलैहिस्सलाम का मोजेज़ा(चमत्कार),जब अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया कि आप अपनी लाठी समुद्र पर मारें,अतःआपने एसा ही किया और (समुद्र के मध्य में)बारह सूखे मार्ग बन गए,और उनके मध्य पानी पहाड़ों के जैसा होगया,अल्लाह का कथन हैः

[18]इसे बोखारीः1019 और मुस्लिमः897 ने वर्णित किया है।

﴿فَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْبَحْرَفَانفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ﴾[19].

अर्थातःहमने मूसा की ओर **वह्य** भेजी कि समुद्र पर अपनी लाठी मार,उसी समय समुद्र फट गया और प्रत्येक भाग पानी का पहाड़ जैसा बड़े पहाड़ के होगया।

द्वितीय उदाहरणःईसा अलैहिस्सलाम का मोजेज़ा(चमत्कार) कि वह अल्लाह के आदेश से मृम्यु को जिवित करते और उन्हें क़बरों से निकाल खड़ा करते थे,अल्लाह का कथन हैः

﴿إذ قال الله يا عيسى ابن مريم اذكر نعمتي عليك وعلى والدتك إذ أيدتك بروح القدس تكلم الناس في المهد وكهلا وإذ علمتك الكتاب والحكمة والتوراة والإنجيل وإذ تخلق من الطين كهيئة الطير فتنفخ فيها فتكون طيرا بإذني وتبرىء الأكمه والأبرص بإذني وَإِذْ تُخْرِجُالْمَوتَى بِإِذْنِي﴾[20].

अर्थातःजब कि अल्लाह तआ़ला फरमाएगा कि ए ईसा बिन(पुत्र)मरयम!मेरा उपहार याद करो जो तुम पर और तुम्हारी माता के उपर हुआ है,जब मेंने तुम को रूहुलकुदस से समर्थन दी।तुम लोगों से वार्ता करते थे गोद में भी और बड़ी आयू में भी और जबकि मेंने तुमको किताब एवं हिकमत(नीति)की बातें और तौरात एवं इंजील का सिक्षा दिया और जब कि तुम मेरे आदेश से गारे से एक रूप बनाते थे जैसे पंक्षि का रूप होता है फिर तुम उसके अंदर फूंक मारदेते थे,जिससे वह पंक्षि बन जाता था मेरे आदेश से और तुम अच्छा करदेते थे जन्म से अंधे को और कोढ़ी को मेरे आदेश से और जब कि तुम मृत्यु को निकाल खड़ा करलेते थे मेरे आदेश से।

तृतीय उदाहरणःमोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साथ यह मोजेज़ा(चमत्कार)हुआ कि जब कोरैश ने आपसे(संदेशवाहन का)चिन्ह पूछा तो आपने चांद की ओर ईशारा किया और लोगों की आंखों के सामने उसके दो टुकड़े होगए,इस विषय में अल्लाह तआ़ला का यह कथन अवतरित हुआः

﴿اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُوَانشَقَّ الْقَمَرُ * وَإِن يَرَوْا آيَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌمُّسْتَمِرٌّ﴾[21]

अर्थातःक़्यामत निकट आगई और चांद फट गया।यह यदि कोई चमत्कार देखते हैं तो मूंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह पूर्व से चला आता हुआ जादू है।

---

[19]. سورةالشعراء: 63

[20]. سورة المائدة: 110

[21]. سورة القمر: 1- 2

यह आध्यात्मिक चिन्हें एवं चमत्कारें जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने संदेशवाहकों की पुष्टि एवं समर्थण्न के रूप में अस्तित्व में लाया,अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के ठोस प्रमाण हैं।

चूंकि अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को स्वीकारना एक स्वाभाविक कार्य है जिस पर स्वभाव व प्रकृति एवं चेतना दोनों प्रमाणित हैं,इस लिए संदेशवाहकों ने अपने समुदाय से कहाः

﴿أفي الله شك فاطر السماوات والأرض﴾[22]

अर्थातःक्या अल्लाह तआ़ला के प्रति तुम्हें संदेह है कि जो आकाशों एवं पृथ्वी का बनाने वाला है।

इब्ने कसीर रही़महुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैः

इस आयत में अल्लाह तआ़ला संदेशवाहकों एवं काफिरों के मध्य होने वाले तर्क वितर्क की सूचना देरहा है,वह इस प्रकार कि जब उनके समुदाय ने उनके द्वारा प्रस्तुत तौही़द(एकेश्वरवाद)के संदेश में संदेह दिखलाया तो संदेशवाहकों ने कहाः

{أفي الله شك}

अर्थातःक्या अल्लाह तआ़ला के प्रति तुम्हें संदेह है।

इसके अंदर दो अर्थ का संभावना पाया जाता हैः

प्रथम अर्थःक्या अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व में तुम्हें संदेह है,क्योंकि प्रकृति इसका साक्ष्य है और उसके अंदर अल्लाह के अस्तित्व का इकरार मौजूद है,इस लिए स्वस्थ स्वभाव के लिए इसका स्वीकार करना अवश्य है,किन्तु किसी के स्वभाव में संदेह एवं अशांति का तत्व प्रवेश करजाए तो उसे एसे प्रमाण की आवश्यकता पड़ती है जो उसे अल्लाह के अस्तित्व(की पहचान)तक पहुंचा सके,इसी लिए संदेशवाहकों ने अपने समुदायों को अल्लाह की पहचान का मार्ग दिखाते हुए उनसे फरमायाः

﴿فاطر السماوات والأرض﴾ (जो आकाशों एवं पृथ्वी का निर्माता है)

जिसने आकाश एवं पृथ्वी को बिना किसी पूर्व के उदाहरण के पैदा किया,उन दोनों पर रचना एवं निर्मान के चिन्ह पाए जाते हैं,इस लिए यह अवश्य है कि उनका कोई रचनाकार हो,और

---

[22]. سورة إبراهيم: 10

वह है अल्लाह जिसके अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं,वही प्रत्येक वस्तु का निर्माता,परमेश्वर एवं मालिक है।

द्वितीय अर्थः

﴿أفي الله شك﴾

(क्या अल्लाह तआ़ला के प्रति तुम्हें संदेह है)अर्थात उसके एकेश्वरवाद में और इस बात में तुम्हें संदेह है कि समस्त प्रकार की पूजाएं केवल उसी के लिए अनिवार्य हैं,और वह समस्त जीव जंतुओं का निर्माता है,उसके अतिरिक्त कोई पूजा का पात्र नहीं,वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं,अधिकतर समुदाय रचनाकार के अस्तित्व का इकरार करती थीं,किन्तु उसके साथ दूसरे जीव की भी पूजा करती थीं जिनके प्रति उनका मानना था कि वे उन्हें लाभ पहुंचा सकती हैं अथवा अल्लाह से निकट कर सकती हैं।समाप्त

शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन नासिर अलसअ़दी रह़ीमहुल्लाहु इसी आयत की व्याख्या में लिखते हैंः

अर्थात कि उसी ने समस्त चीजों को अस्पष्ट किया,अतःजो अल्लाह के अस्तित्व में संदेह करे,जो कि आकाशों एवं पृथ्वी का रचनाकार है,जिसके अस्तित्व पर समस्त चीजों का अस्तित्व निर्भर है,उस मनुष्य के अंदर किसी भी ज्ञात एवं प्रसिद्ध वस्तु का विश्वास नहीं पाया जाता,तककि अध्यात्मिक मामलों पर भी विश्वास नहीं,इसी लिए संदेशवाहकों ने अपने समुदायों से एसा संबोध फरमाया जिसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं।[23]

अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُون﴾[24].

अर्थातःआकाशों एवं पृथ्वी का रचना,रात दिन का हैर फैर,नावों का लोगों को लाभ पहुंचाने वाली चीजों को लिए हुए समुद्र में चलना,आकाश से जल उतार कर,मृत्यु धर्ती को जीवित करदेना,उसमें प्रत्येक प्रकार के जानवरों को फैलादेना,हवाओं का दिसा बदलना,एवं बादल,जो आकाश एवं पृथ्वी के मध्य हमवार हैं,उनमें बुद्धिमानों के लिए अल्लाह की कुदरत के चिन्ह हैं।

---

[23]"तैसीरुलकरीम अर्रह़मान फी तफसीरे कलामिलमन्नान"।

[24]. سورة البقرة: 164

शैख अब्दुर्रह़मान बिन सअ़दी रह़ीमहुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं:

अल्लाह तआ़ला ने सूचना दी है कि इन विशाल जीव जंतुओं में अल्लाह तआ़ला का एकेश्वरवाद एवं उसकी उलूहियित(अल्लाह होने),उसकी महान क़ुदरत,कृपा एवं उसके समस्त विशषताओं के प्रमाण हैं,किन्तु यह समस्त प्रमाण केवल(बुद्धिमानों के लिए हैं)जो इन मामलों में अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हैं जिनके लिए बुद्धि पैदा की गई है,अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदे को जितनी बुद्धि प्रदान की है वह उतनी ही अल्लाह के चिन्हों से लाभ उठाता है और अपनी बुद्धि और सोच विचार से इन चिन्हों का ज्ञान अर्जित करता है।(आकाशो के निर्मान में)अर्थातःआकाशों की उंचाई,उनका विस्तार,उनके ठोस एवं मज़बूत होने में,तथा उन आकाशों में सुर्य,चांद एवं सितारों की रचना एवं बंदों के कलयाण के लिए उनके नियमबद्ध गर्दिश में।(एवं पृथ्वी के रचना में)अर्थात जीव जंतुओं के लिए फर्श के रूप में पृथ्वी को पैदा किया ताकि वह इस पर ठहर सकें और पृथ्वी और जो कुछ उसके ऊपर है उससे लाभ उठाएं।तथा इससे प्रेरणा अर्जित करें कि संसार की रचना एवं संचालन में अल्लाह तआ़ला एक एवं अकेला है और इसमें अल्लाह तआ़ला के महान क़ुदरत का उल्लेख है जिसके माध्यम से अल्लाह तआ़ला ने इस पृथ्वी का निर्मान किया और उसकी नीति का,जिसके आधार पर उसने पृथ्वी को ठोस,सुंदर एवं उचित बनाया एवं उसके कृपा एवं ज्ञान का,जिनके आधार पर उसने पृथ्वी के अंदर जीव जंतु के लाभ की चीज़ें एवं उनकी आवश्यकताएं रखीं और उसमें उसके संपूर्णता एवं उसके एकमात्र पूजा के पात्र होने पर सर्वाधिक प्रभावित प्रमाण है,क्योंकि संसार का निर्माण एवं उसके संचालन एवं समस्त बंदों के मामले का प्रबंध करने में वह अकेला है,(इस लिए पूजा का संपूर्ण पात्र भी केवल वही है न कि कोई और,जिनका कोई योगदान न रचना में ह न संचालन में और न बंदों के मामलों के प्रबंधन में)।

(रात दिन के हैर फैर में)अर्थातःरात एवं दिन का स्वेद से एक दूजे के पीछे रहना।जब उनमें से एक गुजर जाता है तो दूसरा उसके पीछे पीछे आता है।गर्मी,सर्दी एवं संतोलित मौसम में,दोनों का लंबा,छोटा एवं मध्य होना एवं उनके कारण मौसमों में परिवर्तन होना।जिनके माध्यम से समस्त मनु के संतान,मवेशी एवं पृथ्वी के समस्त पैड़ पौधा का प्रबंध होता है।यह सब कुछ एक एसे प्रबंध,संचालन एवं तसखीर के अंतर्गत हो रहा है जिसे देख कर बुद्धि आशचर्यचकित रह जाती हैं और बड़े बड़े बद्धिमान लोग इसके अनुभूति से दूर हैं।यह चीज इस संसार के संचालन करने वाले की क़ुदरत,ज्ञान व नीति,विस्तृत कृपा,आशीर्वाद,उसके इस संचालन,जिसमें वह एकेला है,उसकी महानता,शासन एवं प्रभाव पर प्रमाणित है और यह इस बात को अनिवार्य बनाती है कि उसको अल्लाह(परमेशवर)माना जाए और उसकी पूजा की जाए,केवल उसी से प्रेम किया जाए,उसका सम्मान किया जाए,उससे डरा जाए,उसी से आशाएं रखी जाए और उसके पिर्य कार्यों के लिए प्रयासरत रहा जाए।

(नांवों का समुद्र में चलना)इस आयत में(الفُلك)का अर्थ जहाज़ एवं नांव आदि हैं जिनका रचना अल्लाह तआ़ला ने अपने बंदों के दिलों में डाल दिया और अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए आंतरिक एवं **बाह्य** यंत्रों का रचना किया और उनके प्रयोग का उन्हें क्षमता प्रदान किया।फिर उसने इस अथाह समुद्र और हवाओं को उनके लिए हमवार कर दिया जो समुद्रों में व्यापार के सामान समेत नांवों को लिए फिरती हैं जिनमें लोगों के लिए लाभ एवं उनके जीवीका का प्रबंध किया और नीतियां हैं।

वह कौन है जिसने इन नांवों की रचना उनके दिल में डाला और उनके प्रयोग का उन्हें क्षमता प्रदान किया और उनके लिए वे यंत्र पैदा किए जिनसे वे काम लेते हैं?वह कौन है जिसने नांवों के लिए अथाह समुद्रों को हमवार किया जिसके अंदर यह नांव अल्लाह के आदेश और उसके संचालन से चलते हैं?और वह कौन है जिसने हवाओं को हमवार किया?वह कौर हस्ती है जिसने खुशकि एवं पानी की यात्रा के सवारियों के लिए आग और उन खनिज पदार्थों को पैदा किया जिनकी सहायता से वे सवारियां(अंतरिक्ष एवं समुद्रों में)चलती और उनके सामान भी उठाए फिरते हैं?

क्या यह समस्त मामले अकस्मात प्राप्त होगए अथवा यह निर्बल,आजिज़ मखलूक उन्हें अस्तित्व में लाया है।जो अपनी माता के पेट से जब बाहर आई तो उसे ज्ञान था न क्षमता?फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे क्षमता प्रदान किया फिर उसे प्रत्येक चीजों का ज्ञान दिया जिसका ज्ञान वह देना चाहता था,अथवा उन समस्त चीजों को हमवार करने वाला एक अल्लाह ही है जो नीति एवं ज्ञान वाला है जिसे कोई चीज मजबूर नहीं कर सकती और कोई चीज उसके अधिकार से बाहर नहीं।बल्कि समस्त वस्तु उसकी रोबूबियत(रब होने)के सामने समर्पित,उसकी महानता के सामने मजबूर और उसके विभूति के सामने आत्मसमर्पित हैं और निर्बल बंदे की स्थिति यह है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे उन कारणों में से एक कारण बनाया है जिनके माध्यम से यह बड़े बड़े कार्य होते हैं।यह चीज अल्लाह तआ़ला का अपने जीवों पर कृपा एवं उसके आशीर्वाद पर प्रमाणित है और यह चीज इस बात को प्रमाणित करती है कि समस्त प्रेम,भय,आशा,प्रत्येक प्रकार की आज्ञाकारिता,समर्पन एवं सम्मान केवल उसी हस्ती के लिए हो।

(आकाश से जल उतारा)इसका अर्थ वह वर्षा है जो बादल से बरसता है।(और मृत्यु भूमि को जीवित कर दिया)पृथ्वी ने अनेक प्रकार के खाने एवं पैड़ पौधा उगाए जो जीव जंतुओं के जीवन की आवश्यकता हैं,जिनके बिना वे जीवित नहीं रह सकती।क्या यह उस हस्ती की कुदरत एवं अधिकार का प्रमाण नहीं जिसने यह पानी बरसाया और उसके माध्यम से पृथ्वी में अनेक चीजें पैदा कीं?क्या यह अपने बंदों पर उसकी कृपा एवं उसका आशीर्वाद एवं अपने बंदों के कलयाण का प्रबंध किया?क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि बंदे प्रत्येक अनुसार से उसके अति दरिद्र हैं?क्या यह चीज अनिवार्य नहीं करती कि उनका परमेश्वर एवं उनका

केवल अल्लाह तआ़ला ही हो?क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि अल्लाह तआ़ला मृत्यु को जीवित करेगा और उनको उनके कार्यों का बदला देगा?

(इसमें प्रत्येक प्रकार के पशुओं एव जानवरों को फैला दिया)अर्थात पृथ्वी के चारों ओर विभिन्न प्रकार के जानवर फैलाए,जो उसकी कुदरत,महानता,एकेशवरवाद एवं उसके प्रभुत्व का प्रमाण है।अल्लाह तआ़ला ने उन जानवरों को मनुष्यों के लिए हमवार कर दिया जिनसे वे प्रत्येक रूप से लाभ उठाते हैं।वे उनमें से कुछ जानवरों का मांस खाते हैं एवं कुछ जानवरों का दूध पीते हैं।कुछ जानवरों पर यात्रा करते हैं,कुछ जानवर उनके अन्य उपयोग एवं चौकीदारी के काम आते हैं।कुछ जानवरों से उदाहरण पकड़ी जाती है।अल्लाह तआ़ला ने पृथ्वी में प्रत्येक प्रकार के जानवर फैलाए हैं।वही उनके रिज्क का प्रबंध करता है और वही उनके आहार का प्रायोजक है।पृथ्वी पर चलने फिरने वाले जितने जीव जंतु हैं सबका आजीविका अल्लाह तआ़ला पर है।वही उनके रहने सहने के स्थान को जानता है और उनके सोने जागने के स्थान को भी।

(वहाओं के दिशा बदलने में)अर्थात ठंडी,गर्मी,उत्तरी व दक्षिणी,पूरबी व पच्छमी और उनके मध्य हवाओं का चलना,कभी तो यह हवाएं बादल उठाती हैं कभी यह बादलों को **इकट्ठा** करती है,कभी यह हवाएं अल्लाह तआ़ला का कृपा होती हैं और कभी इन हवाओं को यातना के साथ भेजा जाता है।

कौन है वह जो इन हवाओं को इस प्रकार फैरता है?कौन है जिसने इन हवाओं में बंदों के लिए विभिन्न लाभ रखी हैं जिनसे वह मुक्त नहीं हो सकते?और उन हवाओं को हमवार कर दिया जिनमें समस्त जीवित वस्तुएं जीवित रह सकें एवं शरीरों,वृक्षों,अनाजों एवं पैड़ पौधों का सूधार हो?यह सब कुछ करने वाला केवल वह अल्लाह है जो प्रभावी,नीति वाला एवं अति कृपा वाला है,अपनें बंदों पर कृपा करने वाला है,जो इस बात का पात्र है कि उसके समक्ष विनर्मता के साथ समर्पन हुआ जाए,उसी से प्रेम,उसी की पूजा एवं उसी के ओर लौटा जाए।

आकाश एवं पृथ्वी के मध्य बादल अपने हलके एवं बारीक होने के बावजूद अति अधिक जल को उठाए हुए फिरता है,फिर अल्लाह तआ़ला जहां चाहता है उस बादल को लेजाता है फिर वह उस पानी के माध्यम से पृथ्वी एवं बंदों को जीवन प्रदान करता एवं टीलों एवं हमवार भूमि की सींचाई करता है एवं जीवों पर उसी समय वर्षा बरसाता है जिस समय उसको आवश्यकता होती है।जब अधिक वर्षा उन्हें हानी पहुंचाने लगती है तो वह उसे रोक लेता है।वह बंदों पर कृपा के रूप में वर्षा बरसाता है और अपने कृपा एवं दया से वर्षा को रोक लेता है।उसका प्रभुत्व कितना बड़ा,उसकी भलाई कितनी महान एवं उसका कृपा कितना दयालु वाला है!!।क्या यह बंदों के पकक्ष में बुराई नहीं कि वे अल्लाह तआ़ला के रिज्क से लाभ उठाते हैं,उसके दया के अंतर्गत जीवन गुजारते हैं।फिर वह उन समस्त चीजों से अल्लाह तआ़ला की नाराजगी एवं

अवज्ञा पर सहायता लेते हैं?क्या यह अल्लाह तआ़ला के धैर्य,क्षमा और उसके महान कृपा एवं दया का प्रमाण नहीं?प्रथम एवं अंतिम खूला एवं छिपा अल्लाह तआ़ला ही प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा का पात्र है।

वार्ता का सार यह है कि बुद्धिमान व्यक्ति जब भी इन जीव जंतुओं में विचार एवं अनुखी चीजों में सोच विचार करेगा,और अल्लाह के निर्मान एवं रचना में और उसमें जो उसने कृपा एवं नीति की बारिकियां रखीं हैं,उनमें जितना अधिक चिंता करेगा।तो उसे ज्ञात होगा कि इस संसार का उसने सत्य के लिए और सत्य के साथ निर्मान किया है,तथा यह संसार अल्लाह तआ़ला की हस्ती,एकेश्वरवाद एवं क़्यामत के दिन के चिन्ह एवं प्रमाण हैं,जिनके बारे में उसने उसके संदेशवाहकों ने सूचना दी है और यह संसार अल्लाह तआ़ला के समक्ष हमवार है,वह अपने संचालक के समकक्ष कोई संचालन एवं अवज्ञा नहीं कर सकती।तुझे भी ज्ञात होजाएगा कि समस्त आकाशीय एवं पृथ्वीय संसार उसी के दरिद्र एवं उसी पर भरोसा करते हैं एवं वह स्वयं समस्त संसार से उच्च एवं बेनयाज है।उसके सेवा कोई इश्वर नहीं और उसके अतिरिक्त कोई रब नहीं।

शैख सअ़दी का कथन समाप्त हुआ।

बुद्धिमानों के कानों में कानाफूसी

ए बुद्धिमान पुरूष एवं महिलाओ!आपके सामने यह अस्पष्ट होगया कि यह विस्तृत एवं व्यापक संसार बिना किसी रचनाकार एवं संचालक के अकस्मात अस्तित्व में आकर इस अभूतपूर्व प्रणाली के अनुसार चल नहीं सकती,जब यह अस्पष्ट होगया तो हमारे उपर यह अनिवार्य होता है कि हम उस महान पालनहार पर ईमान लाएं जिसने अपनी हस्ती एवं विशेषता के प्रति हमें क़ुरान के अंदर सूचना दी है,तथा यह भी अनिवार्य होता है कि हम उसकी संपूर्ण रूप से पूजा करें,क्योंकि वही समस्त प्रकार के प्रार्थनाओं का एक मात्र पात्र है।

लेखकः

मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

majed.alrassi@gmail.com

00966505906761